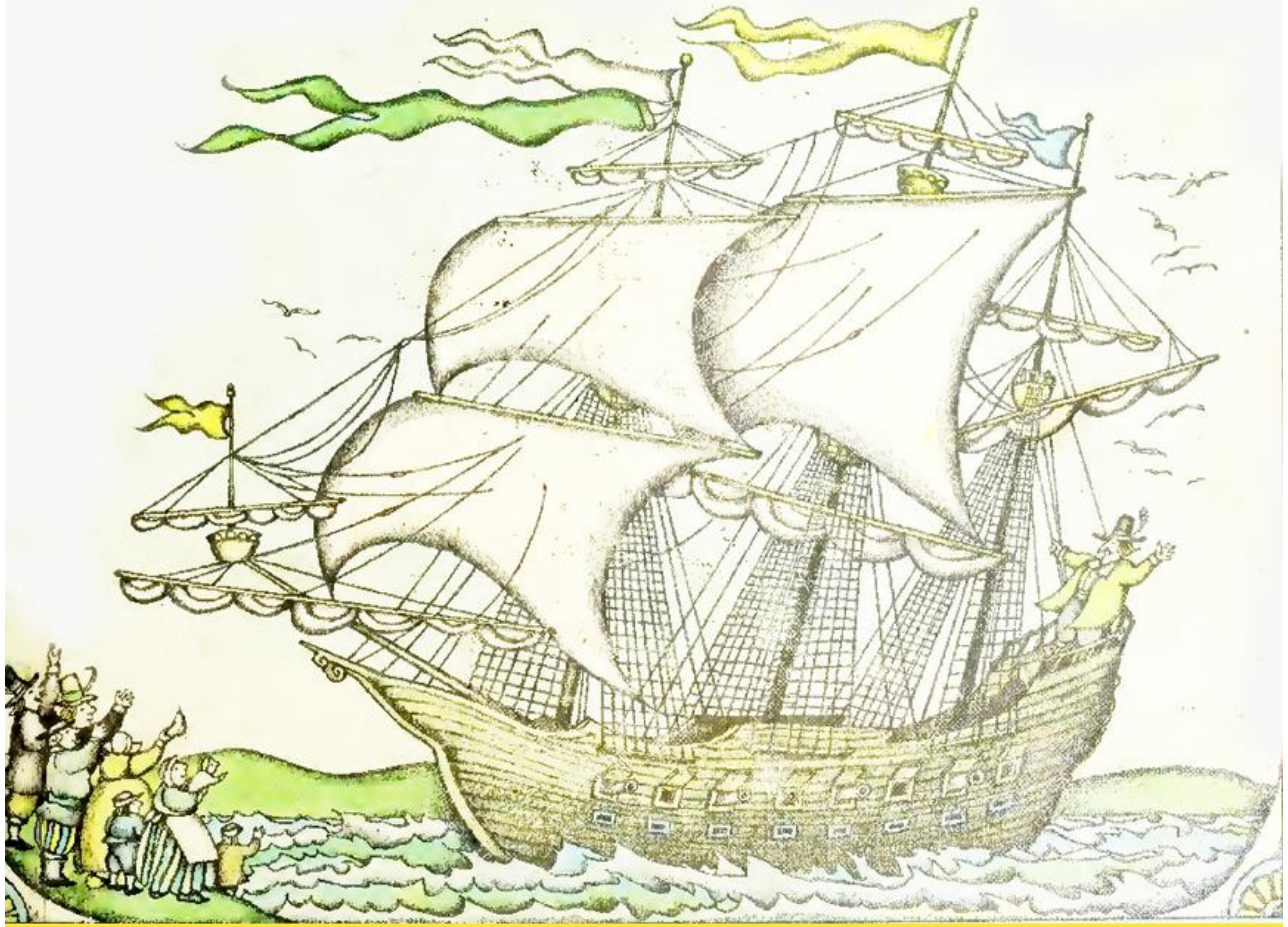
जिस दिन पीटर स्टुवेसेंट शहर में आया

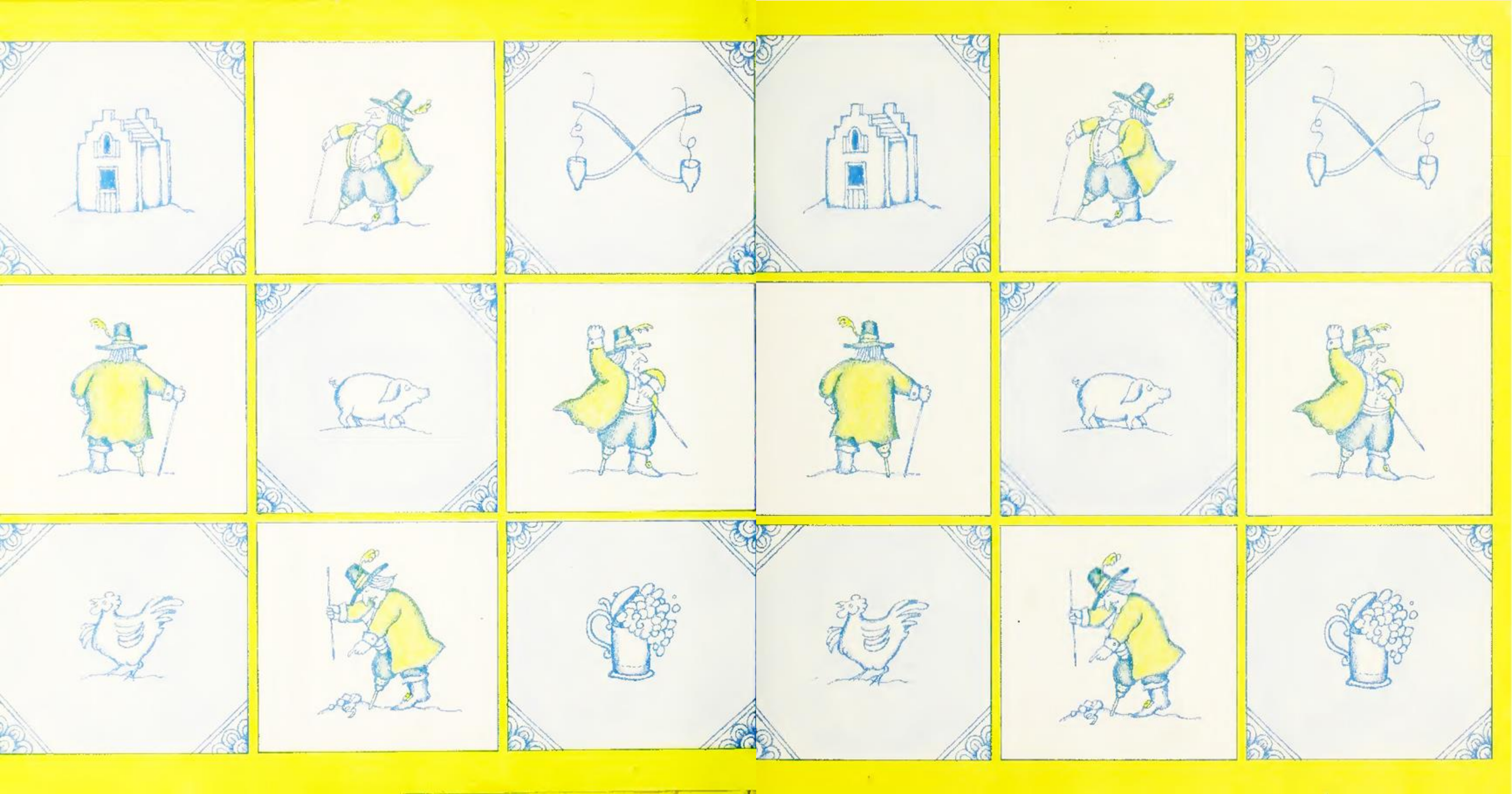
अर्नोल्ड लोबेल



जब पीटर स्टुयवेसेंट नाव से शहर में पहुंचे, तब शहर एक खंडहर था. उन्हें वहां कबाड़ और कीचड़ के साथ टूटे हुए घर, बदबूदार कूड़े के ढेर, खुले में घूम रहे गंदे जानवर दिखे. और किसी को उसकी परवाह नहीं थी. नया गवर्नर सड़कों पर घूमता रहा और हर मिनट और गुस्सा होता गया.

"इस नई दुनिया में बड़ी गड़बड़ है!" पीटर दुखी होकर चिल्लाया. "अच्छे डच वासियों, मैं इस बदहाली की पुरज़ोर निंदा करता हूँ! यह गंदी जगह पूरी तरह से अपमानजनक है. अच्छे डच वासियों, हमें अपने शहर को सुंदर बनाना चाहिए!"

न्यू एम्स्टर्डम के लोग गवर्नर स्टुवेसेंट के नए कानूनों का पालन नहीं करना चाहते थे, लेकिन उन्हें वैसा करना पड़ा. और आख़िर में उन्हें एहसास हुआ कि गवर्नर सही थे.

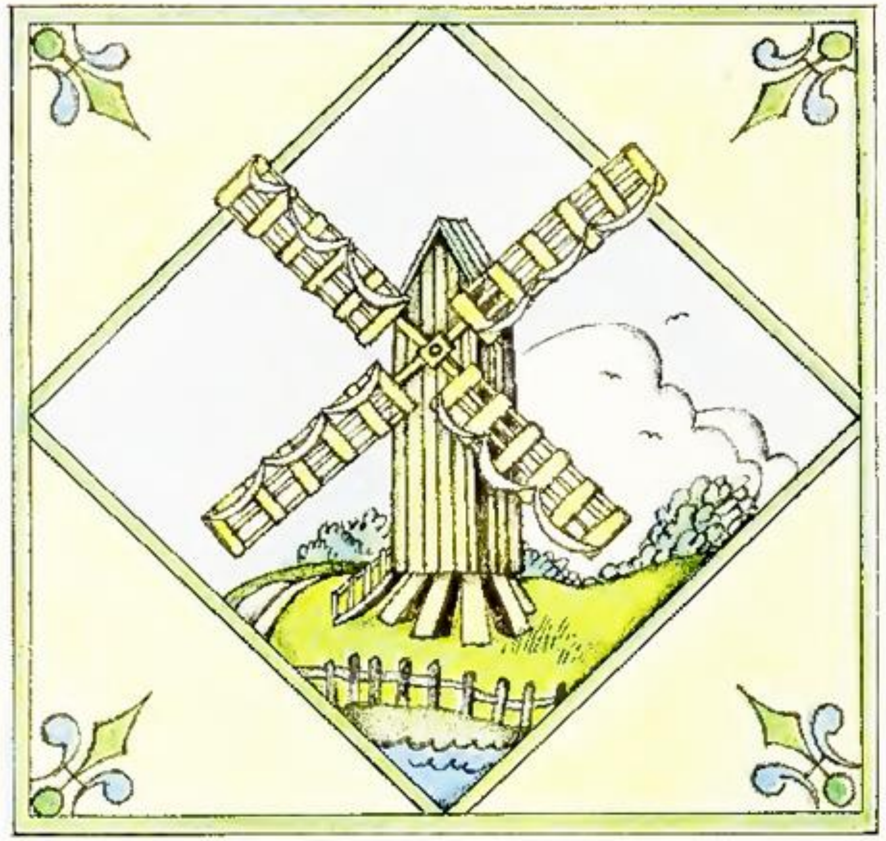


जिस दिन पीटर स्टुवेसेंट शहर में आया

अर्नोल्ड लोबेल







पीटर स्टुवेसेंट के बारे में

पीटर स्टुवेसेंट 1647 के वसंत में अमेरिका आए, उन्हें न्यू नीदरलैंड के डच उपनिवेश के लिए महानिदेशक नियुक्त किया गया था. कॉलोनी की अधिकांश आबादी मैनहट्टन द्वीप के सिरे पर स्थित एक गाँव – न्यू-एम्स्टर्डम में केंद्रित थी. पहले परिवार 1624 में, द्वीप पर आकर बसे थे. उन्हें डच वेस्ट इंडिया कंपनी द्वारा यूरोपीय बाजारों के लिए फर-व्यापार पोस्ट स्थापित करने के लिए वहां भेजा गया था.

स्टुवेसेंट ने पाया कि उनके नए समुदाय में गंभीर समस्याएं थीं. खराब मौसम, इंडियन जनजातियों के बार-बार हमले और उनके पहले दो गवर्नरों के खराब नेतृत्व ने, न्यू एम्स्टर्डम को, पतन के करीब ला दिया था. कस्बे की सड़कें घास-फूस से ढकी हुई और गंदी थीं; और जानवर स्वतंत्र रूप से इधर-उधर भाग रहे थे, और वो हर जगह फैला हुआ कूड़ा-कचरा खाते थे. घर लकड़ी के बने थे और उनकी छतें कच्ची थीं; वे बार-बार जलते थे. और नगर के किले की दीवारें ढह रही थीं.

स्टुवेसेंट, एक शांत स्वभाव के इंसान नहीं थे. उन्होंने जो कुछ देखा उससे वो बेहद गुस्सा हुए और उसने बस्ती के भीतर जीवन को बेहतर बनाने के लिए तुरंत घोषणाओं और कानूनों की एक सूची बनाई.

पीटर स्टुवेसेंट के नेतृत्व में, अगला दशक न्यू एम्स्टर्डम के लिए बड़ी प्रगति का समय रहा. 1660 तक, शहर की जनसंख्या दोगुनी हो गई, व्यापार समृद्ध हुआ, और दिखने में वो शहर यूरोप में डच समुदायों को टक्कर देने लगा. पीटर स्टुवेसेंट के कड़े नियंत्रण ने कॉलोनी को संकट से बाहर निकाला और न्यू नीदरलैंड रहने के लिए एक सुखद स्थान बन गया.

अर्नोल्ड लोबेल



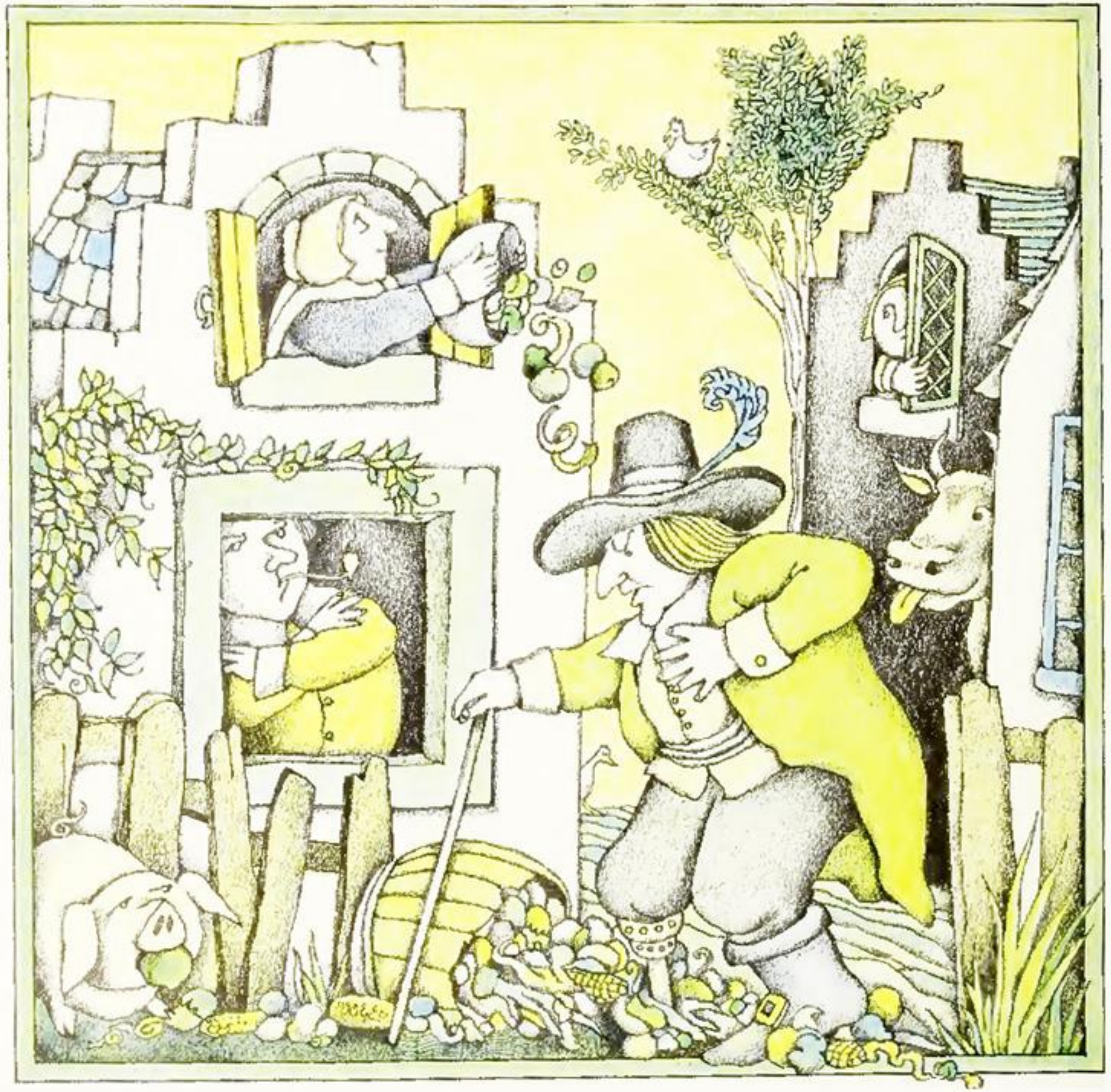
जिस दिन पीटर स्टुवेसेंट जहाज़ से शहर आए
सभी लोग उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े.
लोगों ने स्वागत में तोप से गोला दागा और कतार में इंतजार किया
ताकि अंतिम डचवासी भी उनसे मिल सके.



"मेरे दोस्तों," पीटर ने कहा, "मुझे यहां आकर अच्छा लगा,
क्योंकि मेरी यात्रा सचमुच बहुत लंबी थी.
मैं इस नये देश पर बहुत दृढ़ता से शासन करूँगा,
और मेरी सरकार मजबूत होगी.
हां, मेरी सरकार बेहद मजबूत होगी."

पीटर स्टुवेसेंट लकड़ी से बने एक पैर पर खड़े थे,
फिर उन्होंने कहा, "लेकिन अभी बात करने का समय नहीं है.
आज बहुत अच्छा दिन है, आज ग्यारह मई है,
इसलिए अब मैं शहर में घूमूँगा."



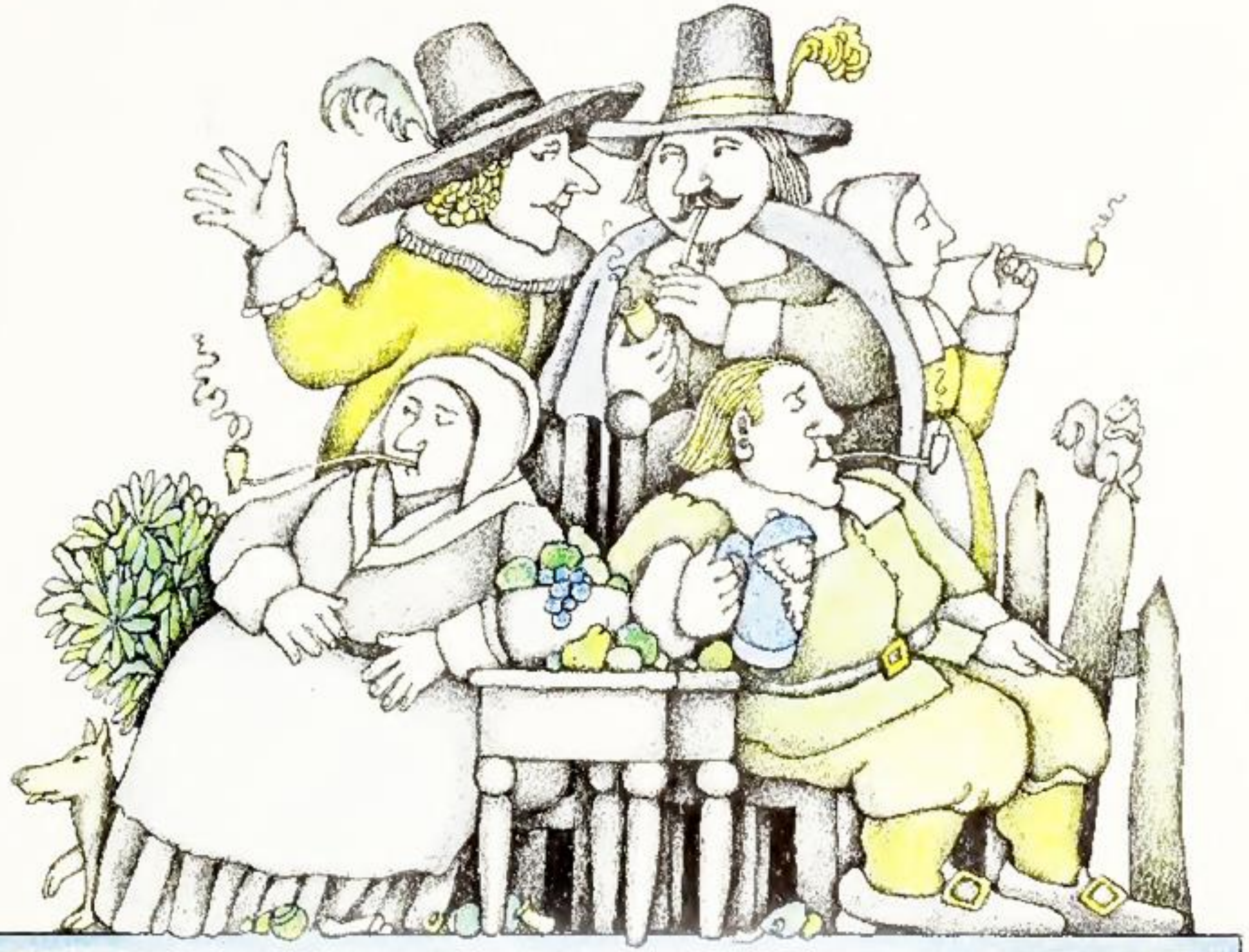


और फिर पीटर न्यू-एम्स्टर्डम में घूमने गए
जो कुछ भी संभव था वो उसे देखना चाहते थे.
लेकिन जैसे ही वो सड़कों पर चले तो उनके चेहरे पर झुर्रियां पड़ गईं
उन्होंने पाया कि वहां कुछ भी साफ़ नहीं था.

गवर्नर कीचड़ और कचरे में फिसल गए,
और उन्होंने कहा, "यहां चीजें बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं.
मैं यहाँ पर घुटनों तक कूड़े में खड़ा हूं,
और यहां की हवा में बेहद बुरी गंध है.
हाँ, यहाँ की हवा में एकदम बदबूदार है."

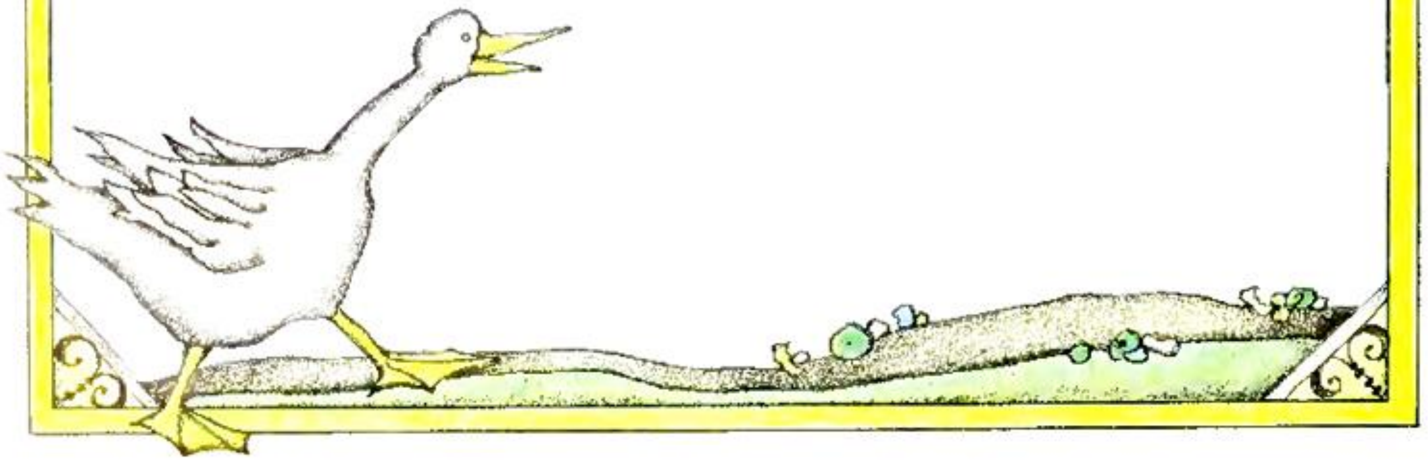


"शहर के सभी घरों को मरम्मत की ज़रूरत है,"
पीटर चिल्लाये, "मैं इसकी पुरज़ोर निंदा करता हूँ!"
यह गंदा शहर पूरी तरह से अपमानजनक है.
अच्छे डचवासियों, हमें इसे सुन्दर बनाना चाहिए!"



परन्तु नगर के लोग अपनी चिलम पीते रहे,
और उन्होंने कहा, "नए गवर्नर को अनदेखा करना ही सबसे अच्छा होगा.
जल्द ही वो भी यहाँ से चला जायेगा
बिल्कुल उन लोगों की तरह जो उससे पहले यहाँ शासन करने आए थे."

ब्रॉडवे से वॉल स्ट्रीट तक स्टुयवेसेंट ने धावा बोला;
वो अपने लकड़ी के पैर पर एक-एक कदम आगे बढ़ा,
कुछ मुर्गियों और बत्तखों ने उसकी टोपी में घोंसला बना लिया
और रास्ते में कुछ हंसों ने टर्राना शुरू कर दिया.
हाँ, रास्ते में उन हंसों ने बेहद शोर मचाया.

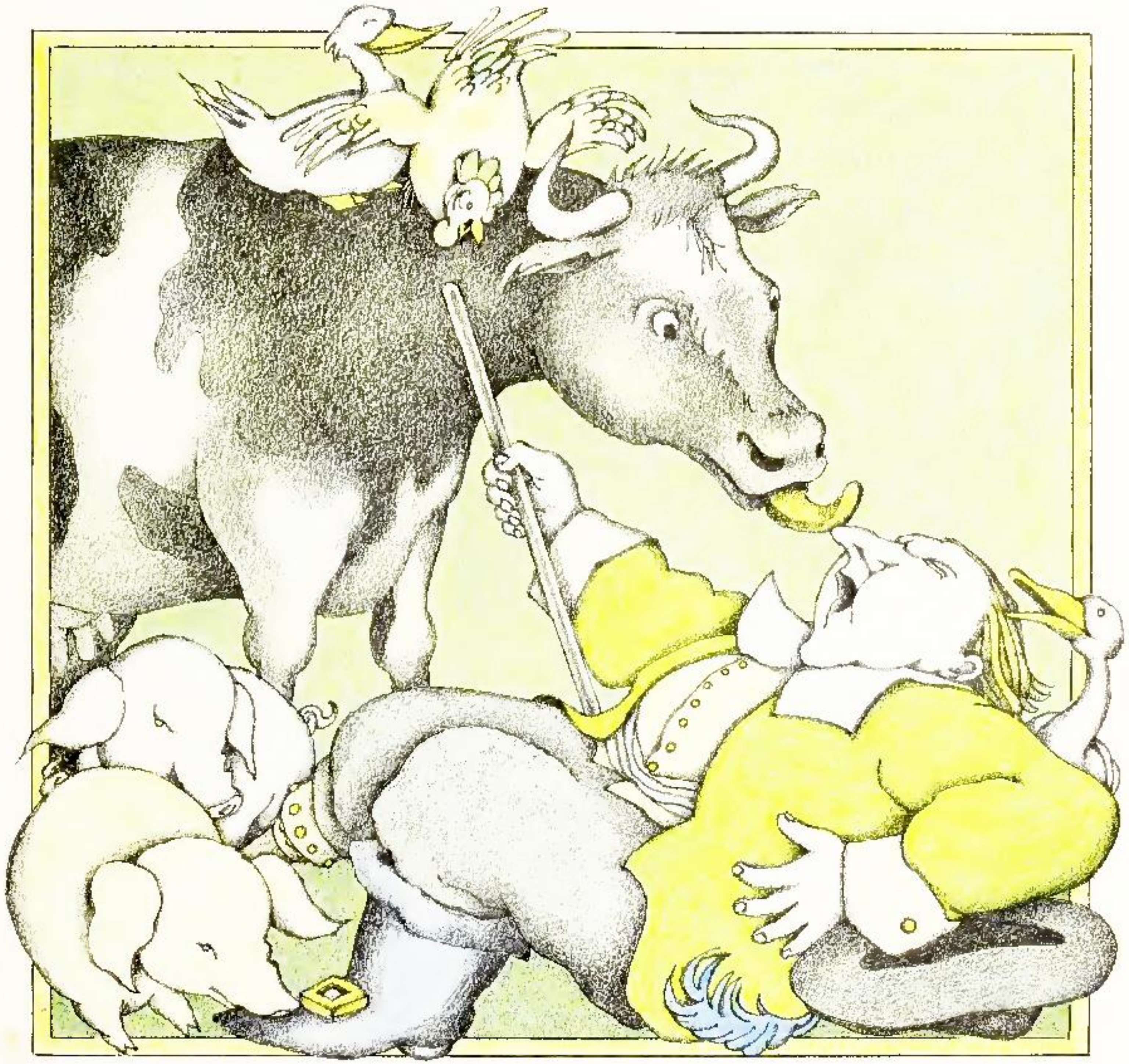






तभी पीछे से एक बकरी, ने बड़ी निर्दयता से,
पीटर को उसकी सीट से धक्का दे दिया.
जैसे ही बेचारा स्टुवेसेंट सड़क पर बैठा.
एक गाय ने उसकी नाक चाट ली
और कुछ सूअरों ने उसके पैर की उँगलियाँ चबा लीं

"यह नई दुनिया बेहद गन्दी और गड़बड़ है!" पीटर दुखी होकर रोया.
"इन जानवरों को बाड़ की जरूरत है.
इन पक्षियों को पिंजरे में रखो!" पीटर गुस्से में चिल्लाया.
"अच्छे डच वासियों, अब अपने होश में आओ!"



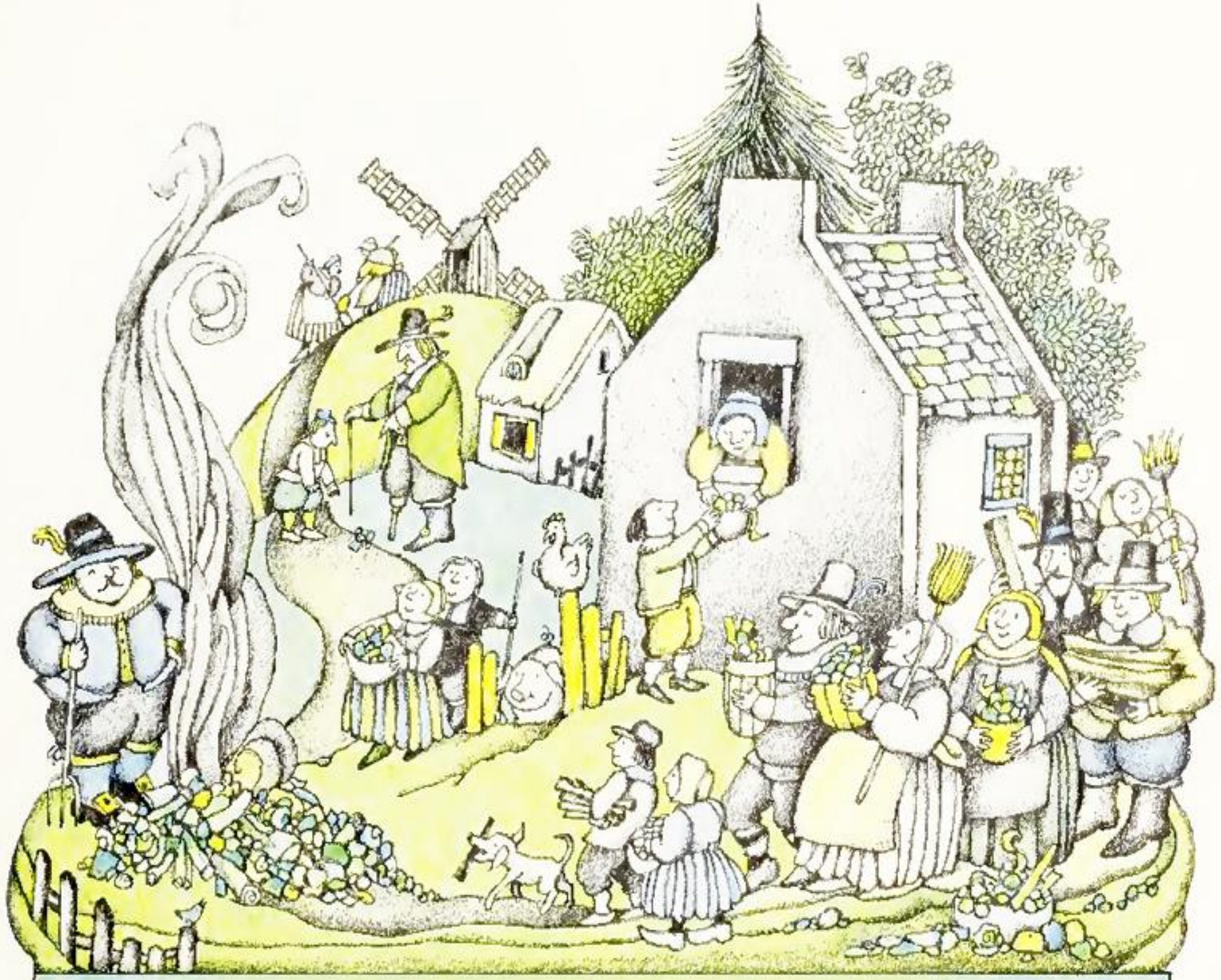


उसकी बुलंद आवाज़ ने ज़मीन को हिला दिया,
गड़गड़ाहट और बिजली से भरे आकाश की तरह.
अच्छे डच लोग हिल गए - वे चिल्लाए, "कोई गलती न करें,
इस आदमी का स्वभाव सचमुच में बहुत डरावना है!"

जबकि नागरिक कांपते हुए समूह में खड़े थे
पीटर चिल्लाया और उसने कहा, "यह मेरी उद्घोषणा है.
सभी मर्द और औरतों, अपनी-अपनी झाड़ू और कुदाल लेकर आओ.
हमें अब बिना किसी हिचकिचाहट के काम करना होगा!
और अपने शहर को साफ़-स्वच्छ करना होगा!"



फिर उन्होंने नई और मजबूत इमारतों का निर्माण किया,



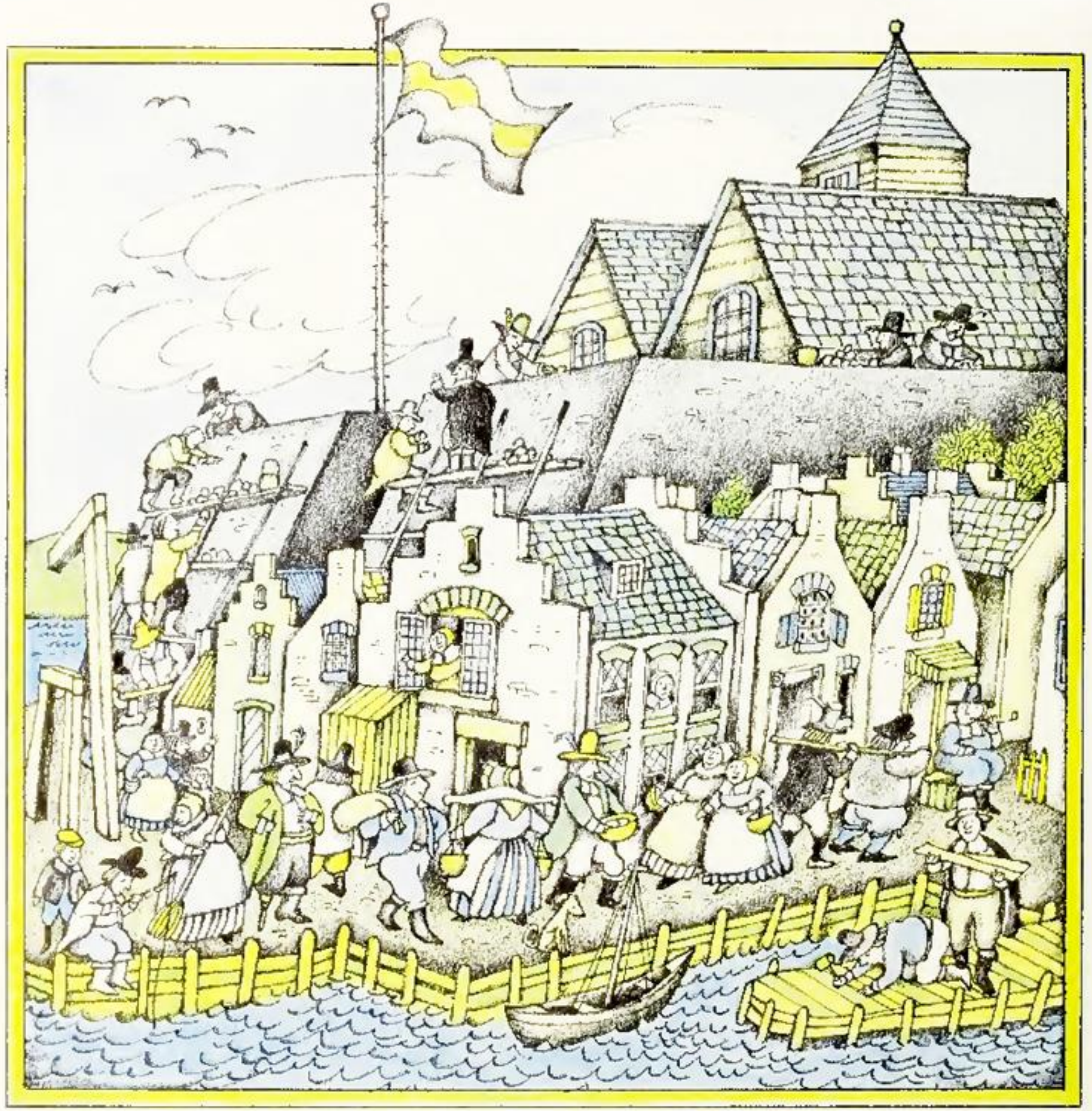
और लोगों ने मिलकर सारा कूड़ा-कचरा साफ़ किया.



उन्होंने बाड़ों की मरम्मत की और कई सड़कें पक्की कीं



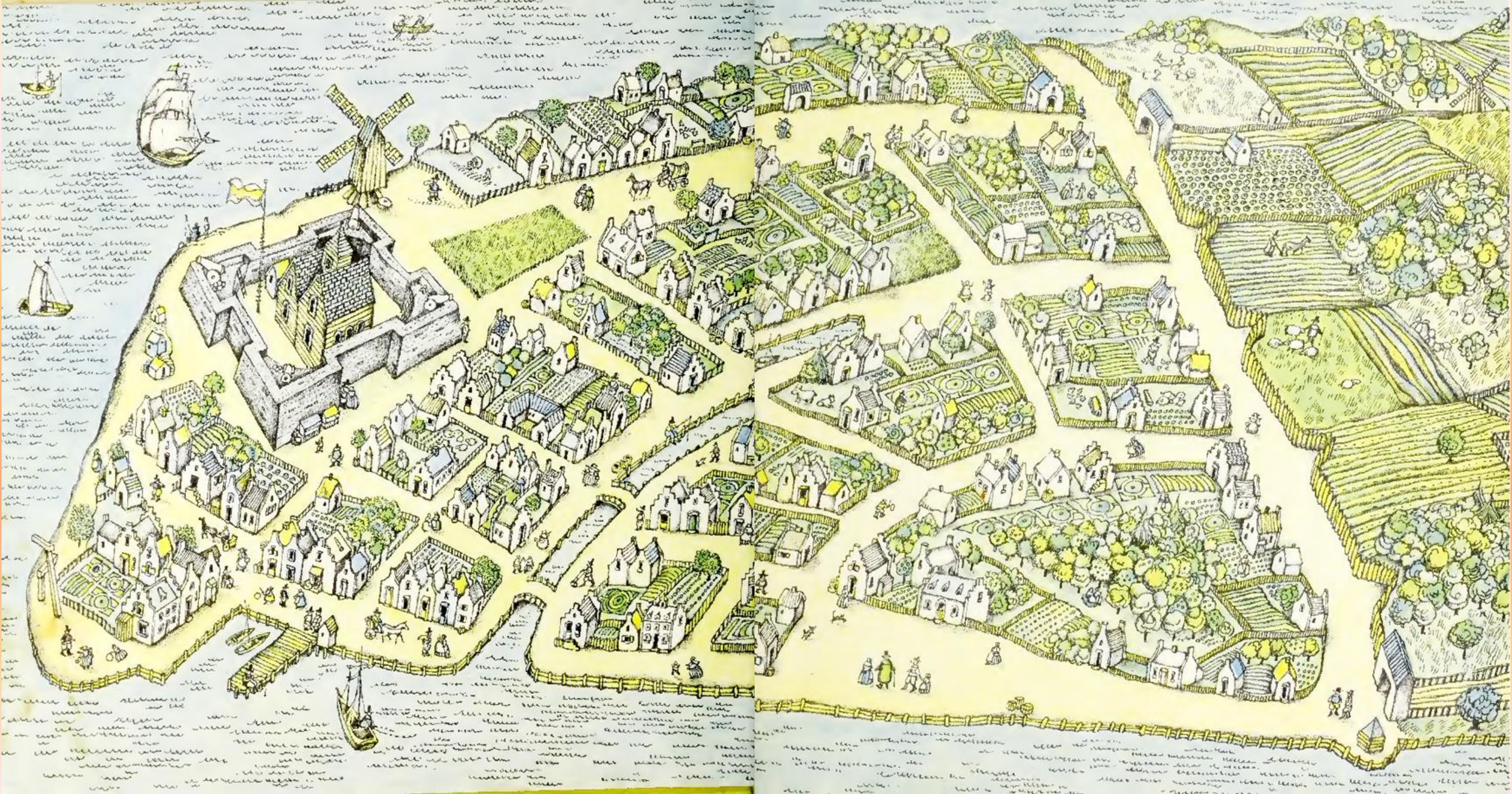
शहर के एक छोर से लेकर खाड़ी तक.

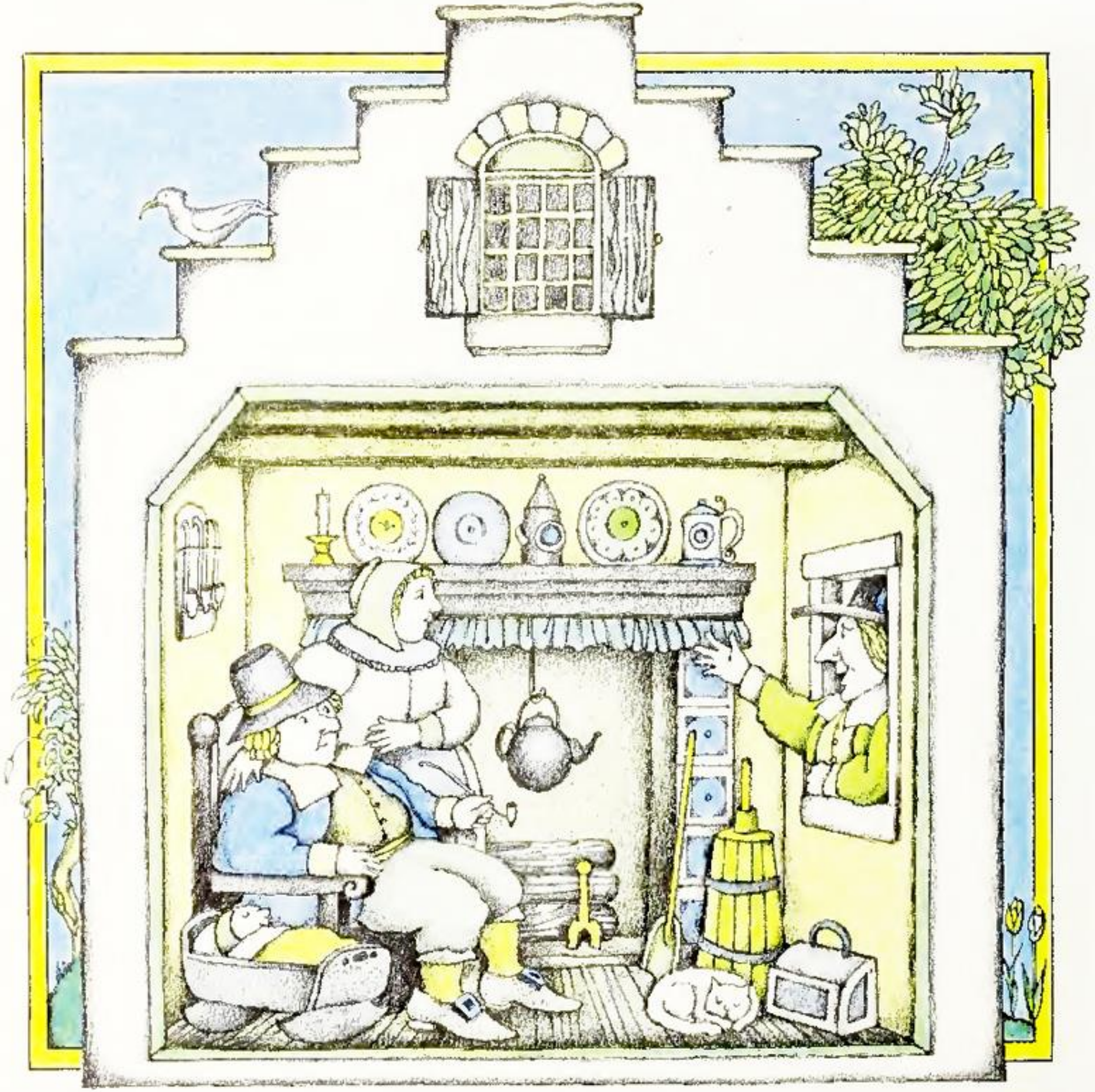


उन्होंने किले की दीवारों के छेद भर दिये,
क्योंकि कॉलोनी को सुरक्षा की जरूरत थी.
लोग इस बात से सहमत थे कि उन्होंने
पीटर स्टुवेसेंट के निर्देशनों का पालन किया था.



कोई दस-बारह गर्मियाँ आईं और चली गईं
उन्होंने लगातार पूर्व और पश्चिम दिशाओं में काम किया.
इतना अच्छा काम चला कि उसका वर्णन करना मुश्किल था
शहर का कौन सा हिस्सा, सबसे अच्छा था,
अब यह कहना बहुत मुश्किल था.

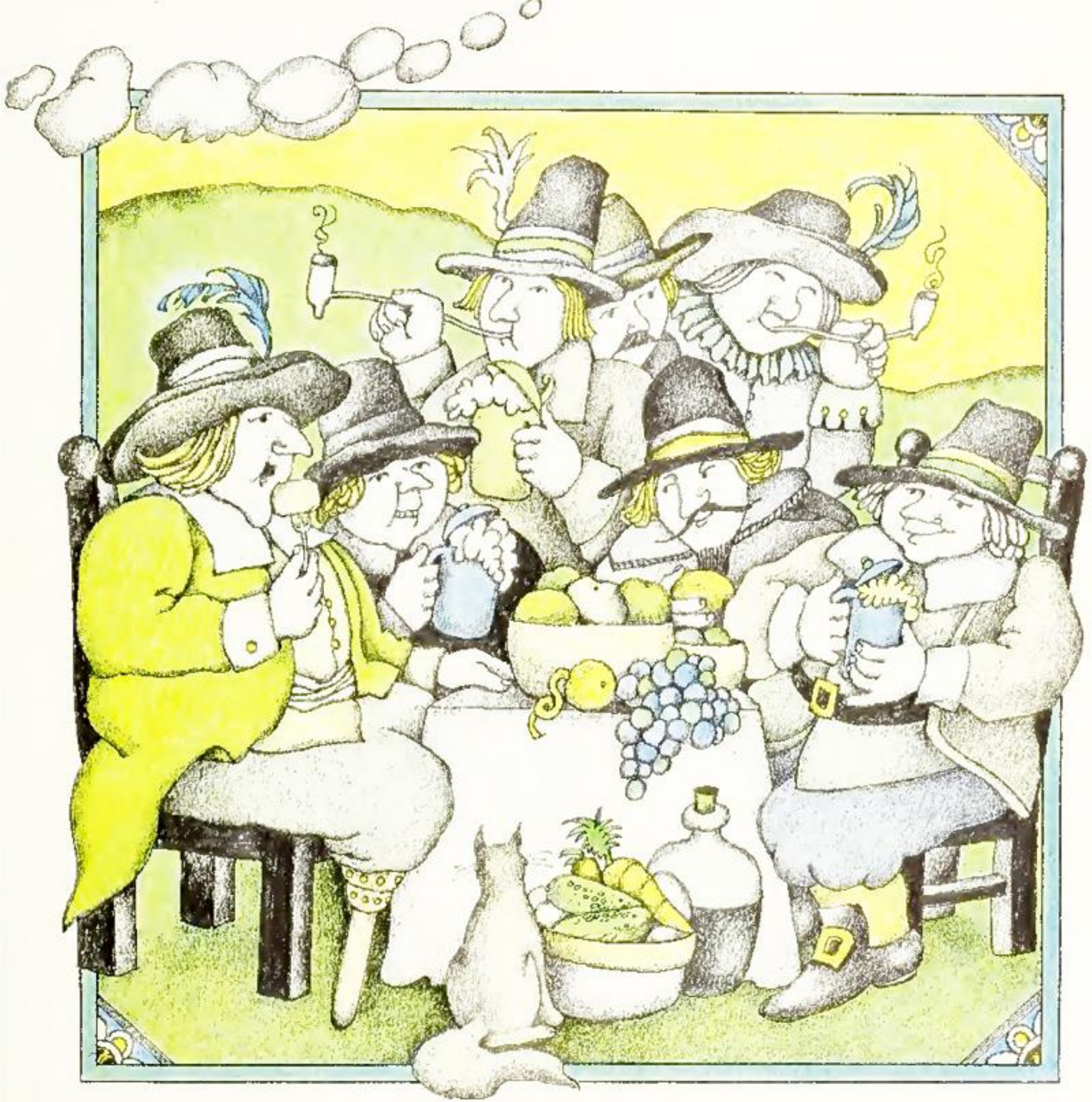




"मेरे बच्चों," पीटर ने कहा, "हमने बहुत मेहनत की है,
और मुझे लगता है कि अब हमें आराम की ज़रुरत है.
मैं कुछ मौज-मस्ती और कुछ खाने के मूड में हूं.
आओ हम सब मिलकर एक बड़ा डच उत्सव मनाएँ!
हाँ, अब एक बड़े उत्सव का समय है!"



न्यू एम्स्टर्डम में प्रत्येक नाक ने खाने की महक सूंघी
हवा में भोजन की सुन्दर खुशबू थी.
प्रत्येक भूखे डच को खाने में बड़ा आनंद आया.
हर जगह खाने की अच्छी-अच्छी चीज़ें थीं.

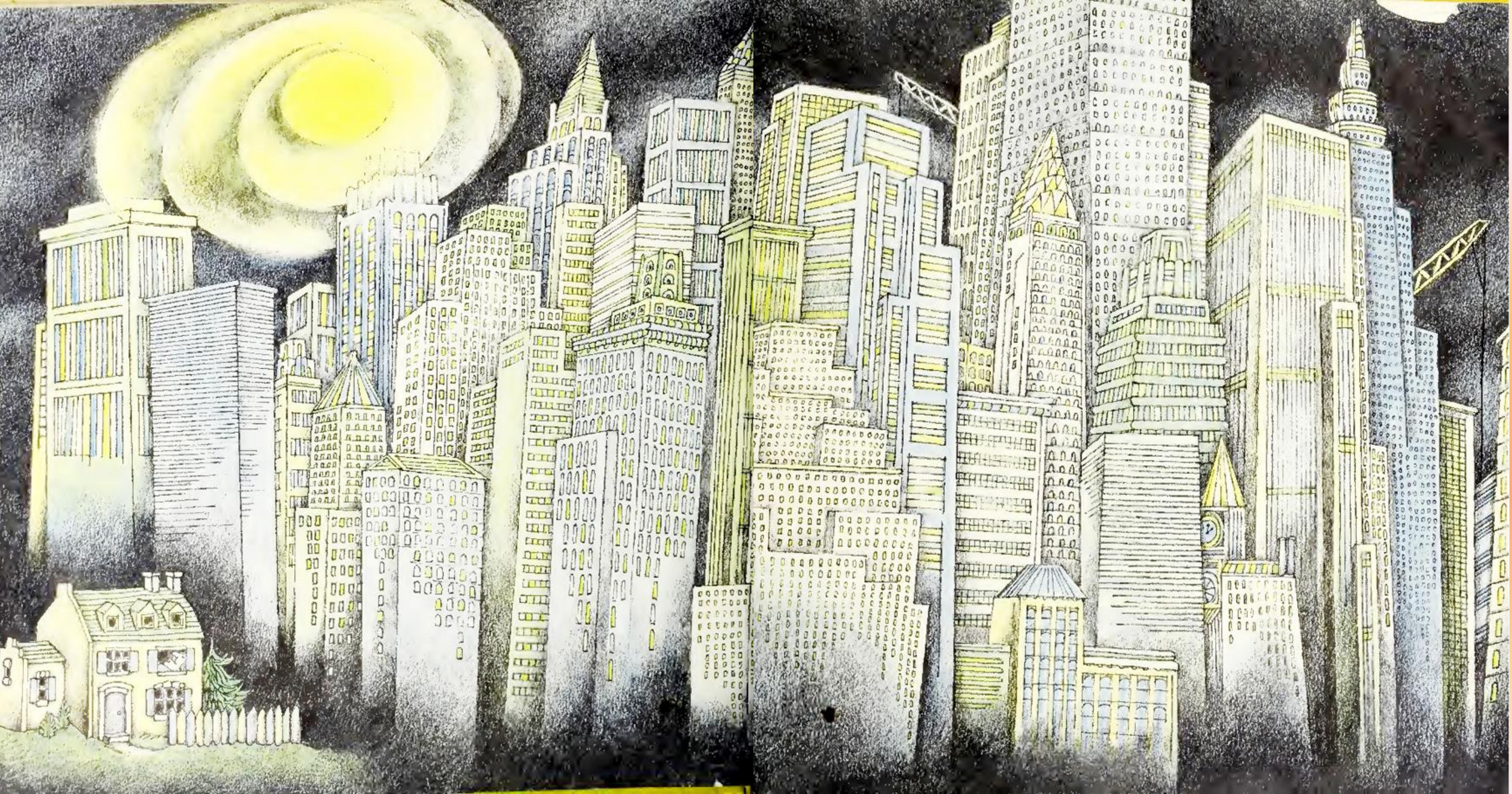




किसी ने पूछा, "क्या हमारा शहर उतना ही छोटा रहेगा?"
लेकिन उस सवाल का उत्तर जानने का कोई तरीका नहीं था,
इसलिए वे शाम तक खुशियां मनाते हुए खाते और नाचते रहे
और अँधेरा होने पर अपने-अपने घर चले गए.

उस रात पीटर स्टुवेसेंट को एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी
एक गोल चाँद चमक रहा था.
वो अपने दरवाजे से बाहर निकला, एक बड़ी गड़गड़ाहट और गर्जना के साथ,
लेकिन बूढ़े स्टुवेसेंट को पता था कि वो एक सपना देख रहा था...







हाँ, पीटर स्टुवेसेंट को पता था कि वो एक सपना देख रहा था.

